B.A (H)
part-II
-Dr B. Kumar

मनोविच्छेदी हिस्ट्रीया-

उन्माद का दो रूप है- रूपांतरित उन्माद तथा मनोविच्छेदी उन्माद।
मनोविच्छेदी उन्माद में मुख्य रूप से मानसिक लक्षण पाये जाते है।

लक्षण;

(i) स्मृतिलोप तथा आत्मविस्मृति- मनोविच्छेदी उन्माद के रोगी में स्मृति लोप देखने को मिलता है, ऐसे रोगी कुछ भी याद नहीं रख पाता है और कभी कभी अपना नाम भी भूल जाता है।

(ii) बहु व्यक्तित्व- ऐसे रोगी भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यक्तित्व बनाये रखते है, दिन में पंडीत जैसा भाषण देते हैं तो रात मे चोरी करते है।

(iii) निद्रा भ्रमण- ऐसे रोगी रात मे निद्रा भ्रमण करते हैं, कभी-कभी रात में बिछावन से जगकर खाना-बनाने लगते हैं, तो कोई-कोई रोगी पूजा- पाठ करने लगते हैं,

(iv) भगोड़ेपन- ऐसे रोगी एक तरह के वातावरण मे नहीं रह पाते हैं इनमें भगोड़ेपन का गुण पाया जाता है,

(vi) मुर्छा तथा संवेगात्मक उपद्रव - ऐसे रोगी में बार-बार मुर्छा आता है तथा वह कभी हँसने लगता है तो कभी रोने लगता है।

कारण: (i) वंशपरंपरा - इस तरह के रोग उन व्यक्तियों में पाया जाता है जिनके पूर्वजों में ये रोग मौजुद होता है।

(ii) मानसिक द्वंद - जिन लोगों में मानसिक द्वंद की अधिकता रहता है उनमें विच्छेदी उन्माद पनपने की खतरा ज्यादा रहता है।

(iii) दुखद परिस्थिति - व्यक्ति अपनी दुखद परिस्थितियों से बचाव के लिए विच्छेद उन्माद और विशेष रुप से स्मृति लोप से पीड़ित हो जाता है। अधिक तनावपूर्ण परिस्थिति के होने पर स्मृति - लोप के साथ-साथ भगोड़ेपन का लक्षण भी विकसित हो जाता है।

(iv) पुनरावृत असफलताएँ - विशेष रुप से बहुव्यक्तित्व का प्रमुख कारण व्यक्तिगत समायोजन तथा किसी कार्य में बार-बार असफल होने पर यह रोग होता है।

उपचार- मनोविश्लेषण विधि, संकेत तथा सम्मोहन द्वारा मनोविच्छेदी उन्माद का उपचार किया जाता है।